अव्यक्त रात्रि क्लास 4-11-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बच्चों की बुधि में तो अभी यह है कि अब वापिस जाना है। वापिस जाने की बात कोई जानते ही नहीं। सृष्टि की आयु बहुत ही लम्बी दिखाई है। इसलिये पता नहीं पड़ता है। सिर्फ तुम बच्चों को ही बाप आकर समझाते हैं बच्चे पावन बनो। सिर पर पाप जो है जिस कारण तमोप्रधान बने हो। अभी याद से ही पावन बनेंगे। बच्चे समझते हैं बराबर हम सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान हैं ना। दुनिया पहले सतोप्रधान फिर तमोप्रधान होती है। सतोप्रधान को स्वर्ग भी कहा जाता है। यह भी हुनर है। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने का हुनर एक बाप के पास ही है। बाप जब आते हैं तो तुम भी सीख जाते हो। अगर हुनर सिखावें नहीं तो कोई काम का नहीं। बाप पतित-पावन है महिमा करते हैं तो जरूर कब पतित को पावन बनाया होगा। तुम बच्चे जानते हो बाप जादूगर है रचनागर है। नई दुनिया स्थापन करते हैं। तो पुरानी का जरूर विनाश करेंगे। तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। जो बाप जो विश्व की सदगति करते हैं नई दुनिया स्थापन करते हैं तो जरूर पुरानी दुनिया का खात्मा करेंगे। ऊंच ते ऊंच हुनर यह है नई दुनिया नया बहिश्त स्थापन करना। बहिश्त दोजख दोनों इकट्ठे हो नहीं सकते। अभी तुम अनुभवी हो। सभी को समझाते रहते हो। इसमें फिर माया की लड़ाई होती है। माया के तूफान आते हैं कोई जीत लेते हैं कोई हारते हैं। कोई विकार में गिरते हैं कोई रूठ पड़ते हैं। नाराज हुआ, सेन्टर में नहीं आते। बाप समझते हैं इनकी तकदीर इतनी बाला नहीं है। कोई बहुत अपने पैर पर कुल्हाड़ा मार लेते कोई थोड़ा। जीते जी यहां मरते हैं फिर जाकर उस जन्म लेते हैं। यहां से मर जाते हैं। यह अनुभव भी तुमको होता है। अभी तुमको अच्छे पायन्ट लगती है। बराबर जीते जी मर कर बाप के बनते हैं फिर रावण के बनते हैं। तुम समझ सकते हो ऐसे होता है। आते हैं फिर कोई के संग में आ गया। कोई गिर पड़ते। कोई गिरते2 सावधान हो जाते हैं। बाप समझाते हैं कल्प पहले मिसल स्थापना होती रहती है। एक तो बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो। जो कुछ पास्ट हुआ। ड्रामा। फिर कल्प बाद होगा। निकला हुआ दूध वापिस थन में जा नहीं सकता। बाप भी धीयं देते हैं। आगे के लिये खबरदार रहो। बाकी बीती सो बीती। बिचारे खबरदार होते भी हैं। हमसे कोई विकर्म न हो। बाप कहते हैं अपना रजिस्टर रखना अच्छा है। तुमको मालूम पड़ेगा कितना हम देवी गुण धारण करते हैं। डायरी है ही इसलिये। कोई भी बात हो नोट कर देना है। सबसे डायरी तुम्हारे लिये अच्छी है। तुम अपने चलन को नोट करो। टाईम वेस्ट तो नहीं गंवाया। तुम्हारा टाईम बहुत2 वैल्युएबुल है। कमाई के लिये मनुष्य कितने मेहनत करते हैं। सबसे ऊंच कमाई होती है तुम्हारी। इस संगम युग पर कमाई की स्थूल धन की नहीं। तुम कमाई करते हो याद की यात्रा की। जिससे विकर्म विनाश हो। तुम ही सतोप्रधान थे। अभी तमोप्रधान हो। तमोप्रधान को ही पतित कहते हैं। हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाओ। पापात्मा कहा जाता है। आत्मा पुण्य आत्मा ही पाप करती है। आत्मा को ही फिर सतोप्रधान बननी है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है? माया यह ही भूला देती है। बाप से वरसा लेना है। तो दैवीगुण जरूर धारण करनी है। दैवीगुण धारण तब होती है जब तुम सतोप्रधान बनो। है भी बहुत सहज। डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। बहुत बड़ा इम्तहान है। विश्व की बादशाही तुमको मिलती है। एकदम भरपूर हो जाना चाहिए। बच्चों को मस्त खुशी होनी चाहिए। टाईम लगता है। शरीर निर्वाह लिये धंधा आदि भी करना है। यह ड्रामा बना हुआ है। जो कल्प पहले पढ़े हैं ऐसे ही पढ़ते रहते हैं। देरी से आने वाले देरी से आते हैं। कोई देरी से आने वाले भी पास हो जाते हैं। हरेक के पुरुषार्थ पर है स्कूल में भी कोई फेल हो जाते हैं को फुल पास हो जाते हैं। वह बाप बहुत लवली है। इसलिये लौकिक बाप होते भी पारलौकिक बाप को याद करते हैं। कहते हैं ना ओ गाड फादर। यह भी सर्वव्यापी का ज्ञान बुधि से निकलता नहीं है। भारत से ही यह सर्वव्यापी की बिमारी निकली है। फिर औरों में फैल जाते हैं। बहुत कड़ी बिमारी है। देहअभिमानी की है पहले नम्बर की बिमारी। 5 विकारों की बिमारियां। अभी तुम समझते हो हम पुरानी दुनिया के पुरानी कुराज्य में हैं। अभी हम अपना राज्य---

स्थापन करते हैं। तुम जानते हो यह रावणराज्य की राजधानी है। अभी तुम पुरुषार्थ करते हो नई दुनिया के लिये। यह है पुरानी दुनिया। कलियुग का अन्त और सतयुग का आदि है यह कोई भी विद्वान पंडित आदि नहीं जानते हैं। आगे चल देखते रहेंगे क्या2 होता है। कहेंगे ड्रामा। समय नजदीक आयेगा तो फिर सहज समझ जायेंगे। ड्रामा ऐसा बना हुआ है जो सेकण्ड व सेकण्ड रिपीट होता रहता है। माया की गुप्त चपाट लगने सेवायें हो जाते हैं। तुमको अचल अडोल बनना है। मुहनत है। एटामिक बम्स की लड़ाई छिड़ी फिर आपदायें भी आनी है। अभी तक मुन पर जाने कोशिश कर रहे हैं। अभी वहां कुछ थोड़ी ही है। यह भी ड्रामा में पार्ट है। तुम बच्चों के लिये मुख्य है याद की यात्रा। तुम हो ही दूर देश के रहने वाले। यहां आये हो देश-परायें। बाप को जानने से सभी कुछ जान जाते हो। फिर कोई भी प्रश्न पूछ न सके। बाप को नहीं जानते तब प्रश्न पूछते हैं। 84 के चक्र को याद जरूर करना है। बाबा आया हुआ है घर ले जाने। बाप आये हैं बहिश्त का लायक बनाने। वापस जरूर जाना है। नई दुनिया और नई दुनिया में रहने वाले तैयार हो रहे हैं। किसको भी निष्ठा में जोर देकर नहीं बिठाना है। वह हठयोग हो जाता। माथा ही खराब हो जाता है। कोई ध्यान में चले जाते हैं वह कोई काम का नहीं। न ध्यान है न ज्ञान है। जोरी से बिठाना न है। खाओ पीओ कुछ भी करो बाप को याद करते रहो। खास क्यों बिठायें। ऐसी कोई जरूरत नहीं है। भल कहते हैं प्रोग्राम आया। जो हुआ सो ड्रामा में था। समाचार पीछे आता है तो कहेंगे ड्रामा में जो था सो हुआ। बाप को तो बहुत प्यार से याद करना है। आत्मा जानती है हमारा वह बाप है। जिससे बेहद का वरसा मिलता है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 5-11-68:- फूलों की कविता पढ़ती है? फूल और कांटा। इसका कान्ट्रास्ट भी अभी तुम समझ सकते हो। सतयुग में यह कान्ट्रास्ट नहीं समझा सकते। बच्चे फील करते हैं आगे हम कांटे थे। जो कुछ कहो सो थे। बन्दर थे, जानवर भी थे। अभी बाप फूल बना रहे हैं। फील करते हो क्या लाईफ थी। अभी क्या है। रावण के राज्य में कैसे जीवन बरबाद होती है, अपने राज्य में कैसे जीवन आबाद होनी है। शिव बाबा आबाद करते हैं रावण बरबाद करती है। आबादी बरबादी का ही खेल है। तुमको अभी फीलिंग आती है जब कि बाप समझाते हैं। हम क्या थे। बाबा आकर क्या बनाते हैं। अब हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। यह याद रहनी चाहिए। याद रहे तो सदैव खुशी रहे। यहां तुम सुनते हो तो खुशी का पारा चढ़ता है। यहां तुम रिफ्रेश होते हो। समझा है ना। फूल को पानी मिलने रिफ्रेश होता है। तुमको भी बागवान पानी देते हैं तो समझते हो हम क्या थे क्या बनते हैं। फिर धंधे-धोरी में विस्मृति हो जाती है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बच्चे जो सर्विस पर हैं वह तो चलते रहते हैं। सर्विस बिगर उनको आराम नहीं आता। जैसे बाप रहमदिल, बच्चे भी रहमदिल बन रहे हैं। दिन प्रति दिन समय थोड़ा होता जाता है। ड्रामा के प्लैन अनुसार। ड्रामा को तुम बच्चे ही जानते हो। जो तुम्हारे संग में आते हैं उनको यह रंग लगता है। तुम बच्चों की बुधि में हैबाकी थोड़ा समय है। दुनिया के मनुष्य तो नहीं जानते। भारत कितना अथाह है। तुम कितने थोड़े हो। तुम्हारी गुप्त सेना है जो योगबल से अपना राज-भाग ले रही है। उन में वृधि हो जाती है। अभी छोटा झाड़ है। तूफान भी लगते हैं। फिर नई दुनिया में तूफान की बात नहीं रहेगी। यहां तो झाड़ को तूफान लगते हैं। कई छनते हैं कई एड होते हैं। प्रजा बहुत बनती जाती है। फूलों का झाड़ तो स्थापन होना ही है। वट का जंगल होता है ना। इनको भी आग लगनी है। गाया हुआ है भंभोर को आग लगनी है। अनेक प्रकार की आपदायें होती हैं। कोई को स्वप्न में भी नहीं रहता है कैसे मौत आना है। तुम जानते हो आज कल की बात है। तुम बच्चे जानते हो भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं। तो बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए। कृष्ण को पिता, टीचर गुरु नहीं कह सकते। इनको तो तुम बाप टीचर गुरु कहते हो। गीता में है मात-पिता। बाकी सभी है रचना। रचना से वरसा मिल न सके। गीता क्रियेट की है तो उनसे वरसा मिलता है। बाप समझाते हैं वह है झूठी गीता। जो पढ़ते2 तुम गिरे आये हो। फिर वही गीता और इवरासुनने से तुम चढ़ जाते—

हो। गीता है नम्बरवन शास्त्र। तुम बच्चों को कितनी समझ मिलती है। म्युजियम आदि खोलने कितना खर्चा किया जाता है। सिर्फ समझाने लिये। नहीं तो इन चित्रों आदि की भी दरकार नहीं रहती। बाबा आया हुआ है स्वर्ग की बादशाही जरूर देंगे। वहां तो पवित्र भी बनना होगा। आगे चल निश्चय हुआ कि बाबा आया हुआ है तो झट भागेंगे बैरीस्टरी पढ़ते हैं तो अदालत उठती है ऐसे घर बनावेंगे, यह करेंगे। वैसे ही यह बेहद का बाप आया है। उन से हम यह वरसा पावेंगे। ऐसे2 महल बनावेंगे। यह करेंगे। परन्तु माया उस खुशी में रहने नहीं देती है। रामसम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय है ना। बाप कहते हैं काम पर जीत पहनो तो जगत जीत बनेंगे। जगत-जीत इन ल०ना० को कहेंगे। यहां बैठते हो तो सुखधाम शान्तिधाम याद आना चाहिए। बीती सो बीती। आगे का निश्चय करते हैं तो खुशी होती है। 2500 वर्ष सभी कोशिश करते हैं मुक्तिधाम जाने लिये परन्तु उनको घर का पता नहीं। अभी बाप ने घर और राजधानी का पता बताया है। और क्या बतावेंगे। यह दुःखधाम खत्म होना है। निरन्तर याद होगी तो निरन्तर खुशी होगी। जितनी याद उतनी खुशी। अच्छा गुडनाईट।

रात्रिक्लास 7-11-68:- हम स्टुडन्ट हैं यह पढ़ रहे हैं। यह सुनावे तो भी अनुभव है। हम स्टुडन्ट है बापदादा के यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं। हम यह बनने लिये पढ़ते हैं। पुरानी दुनिया तो बदलनी ही है। यह भी तुम जानते हो। और कोई को भी मालूम नहीं कि दुनिया बदलती है। तुम नई दुनिया लिये राजयोग सीखते हो। स्टुडन्ट किसके हो? बाप दादा के। वही बाप टीचर गुरु है। यह दिल में याद रहना चाहिए। हमको भगवान पढ़ा रहे हैं। भगवान भगवती होते ही हैं सतयुग में। यह घड़ी2 याद आना चाहिए हमको भगवान पढ़ाते हैं। वह बाप है। सतयुग माना नई दुनिया में जरूर जावेंगे उनको अमरलोक कहते हैं। फिर शिवालय याद करते रहो। शिव बाबा से वरसा मिलता है। हम रहने वाले ही हैं शिवालय के। शिवालय ही हमारे बाप का वरसा है। बाप कहते हैं तुम कुछ भी नहीं जानते थे। अभी बाप को जानने से सभी कुछ जान जाते हो। तुम जानते हो बाप आये हैं हमारे सभी दुःख हरने। गायन भी है दुःख हर्ता सुख कर्ता। यहां बच्चे आते हैं तो नई जिन्दगी मिलती है। अर्थात नई दुनिया के लिये नई जिन्दगी। तो अपने दिल को खुश रखना है। कई धंधे में लगे रहते हैं तो खुशी नहीं रहती है। बच्चे जानते हैं भुवन में तो अपना परिवार ही होगा। यहां स्मृति अच्छा रह सकती है। यहां वायुमंडल बड़ा अच्छा है। कोई किचड़ा नहीं। चित्र भी लगे पड़े हैं। कृष्ण देखो स्वर्ग याद आयेगा। घड़ी2 याद आने से कल्याण ही है। बाहर में लिखे दो बेहद के बाप परमपिता शिव है बेहद का वरसा कैसे मिलता है/आकर समझो। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए रोज बाप याद प्यार देते हैं। रोज याद प्यार सुनने से खुशी का पारा चढ़ जाना चाहिए। आधा भोजन खुशी में हो जाना चाहिए। बाकी आधा खाना चाहिए। सिमरणकरना चाहिए कौन याद प्यार देते हैं। फिर 5000 वर्ष बाद भगवान का पत्र मिलेगा। कोई के ख्याल में नहीं होगा भगवान कैसे पत्र लिखते हैं। जितना याद करेंगे सतोप्रधान बनते जावेंगे। यम से बेगम होना है। यह सभी दुःख दूर हो जायेंगा। ऐसा न हो सजा खानी पड़े। जो भोचरा खाने वाले होंगे उनको सा० होगा। सा० करते सजा भोगते जायेंगे। इसको कहा जाता है कयामत का समय। हिसाब किताब चुकुत का समय। कोई का भी पाप का हिसाबकिताब रहता नहीं। यह तो समझते हो ना। गफ्लत करने से बहुत पछताना होगा। स्टुडन्ट गफ्लत करते हैं तो नापास हो जाते हैं। तुम्हारा तो एक सेकण्ड भी व्यर्थ न जाना चाहिए। नम्बरवार तो होते ही हैं। महारथी घोड़ेसवार प्यादे। प्रजा में भी तीनों हैं। फर्स्ट क्लास सेकण्ड क्लास थर्ड क्लास होते हैं। फर्क होता है ना। वहां तो कर्म अकर्म हो जाता है। कितना समझाया जाता है। जितने का कल्याण करेंगे उतना ही ऐवजा मिलेगा। हरेक के अपने घर में चित्र रखे हुये हो। बोर्ड लगा पड़ा हो। एक त्रिमूर्ति गोले का चित्र काफी है। कोई को समझाना भी सीखना चाहिए। नहीं तो क्या पद पावेंगे। ठडेरा नहीं बनना है। उनको कान ठक2 सुनते2 बायरे हो जाते हैं जैसे कि सुनते ही नहीं। वैसे ही तुमको ठठेरे मिसल कान नहीं होनी चाहिए। बाप जो कहे वह अमल करना है। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।